## 8

# सामाजिक प्रतिमान एवं मूल्य

जब शिक्षक कक्षा में प्रवेश करते हैं तो विद्यार्थियों से यह अपेक्षा की जाती है कि खड़े होकर शिक्षक के प्रति आदर-भाव प्रकट करें। बहुत अधिक शराब पीना, परीक्षा में धोखाधड़ी करना आधुनिक समाज में स्वीकार्य नहीं है और इन्हें हानिकारक माना जाता है। दूसरी तरफ माता-पिता के प्रति बच्चों की आज्ञाकारिता आधुनिक समाज में जरूरी मानी जाती है। समाजशास्त्र में ये जाने हुए प्रतिमान और मूल्य हैं। इस पाठ में हम प्रतिमान तथा मूल्य को तथा समाज को समझने में उनके महत्व के बारे में पढ़ेंगे।

## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप समर्थ होंगे:

- समाजशास्त्री प्रतिमाम तथा उनकी प्रक्रिया के गठन से क्या समझते हैं- इस बात की व्याख्या करने में;
- अनेक प्रकार के प्रतिमानों की विवेचना करने में;
- प्रतिमानविहीनता की व्याख्या और वर्णन करने में;
- समाजशास्त्री मूल्यों से क्या समझते हैं इसकी व्याख्या करने में;
- पारम्परिक एवं आधुनिक मूल्यों तथा मूल्य संघर्षों को पूरी तरह अभिव्यक्त करने में;
- प्रतिमानों तथा मूल्यों के संबंधों का वर्णन करने में।

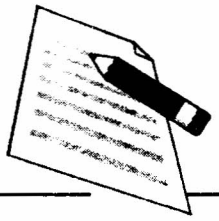

Notes

## 8.1 प्रतिमान

प्रतिमान तथा मूल्य प्रत्येक समाज के आवश्यक अंग हैं। हम गलत नहीं होंगे यदि हम उन्हें सामाजिक अस्तित्व के स्तम्भ के रूप में मानें। व्यक्ति द्वारा धारण किये गये विचार जो वांछनीय हैं, उचित हैं, अच्छे या बुरे हैं वे ही मूल्य हैं। एक समाज से दूसरे समाज में मूल्यों के बीच भेद होता है। व्यक्ति के मूल्य उस खास संस्कृति से उत्पन्न होते हैं जिसका कि वह सदस्य होता है। उदाहरण के लिए भारत में अधिकतर लोग बेटा पाने की ही इच्छा रखते हैं और कुछ मामलों में कन्या-शिशुओं की हत्या कर दी जाती है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि नर संतान को महत्व दिया जाता है। दूसरी तरफ प्रतिमानों को सामान्यत: आचरण के उपयुक्त और सही रूप में माना जाता है। समकालीन समाज के मूल्यों के साथ व्यक्ति को किस प्रकार तालमेल बिठाना चाहिए, इसके लिए वे विशेष नुस्खे हैं। इस प्रकार प्रतिमानों को मूल्यों के प्रतिबिम्ब के रूप में देखा जाना चाहिए। यदि छात्र शिक्षक के कक्षा में प्रवेश करने पर खड़े हो जाते हैं, यह विशिष्ट प्रतिमान शिक्षक के प्रति आदर-भाव प्रकट करने को प्रतिबिम्बित करता है। सभी मानवीय समूह प्रतिमानों के निश्चित समूह को प्रतिबिम्बित करते हैं जो सकारात्मक या नकारात्मक अनुमति द्वारा समर्थित होते हैं।

आम तौर पर हम एक चिकित्सक से किस तरह के बर्ताव की अपेक्षा करते हैं। चिकित्सकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे शान्त, स्थिर चित्त, सहानुभूतिपूर्ण तथा हमेशा उत्तरदायी रहें। कहने का अर्थ है कि चिकित्सक से हम एक खास बर्ताव की अपेक्षा करते हैं जिसकी अपेक्षा हम दूसरे पेशे के लोगों से नहीं करते। प्रतिमान वह नियम या मानक है जो चिकित्सक के बर्ताव पर नियंत्रण रखता है जिसकी अपेक्षा हमें दूसरे पेशे के लोगों से नहीं होती। प्रतिमान वह नियम या मानक हैं, जो उन सामाजिक स्थितियों में, जिनमें हम काम करते हैं और जिनसे हम चालित होते हैं, हमारे व्यवहार को नियंत्रित करता है। प्रतिमान समूह की भागीदारीकी अपेक्षाएँ हैं। ऐसी अपेक्षाएं इन वक्तव्यों में दिखाई पड़ती हैं जैसे -''अच्छे नागरिक जीवन का आदर करते हैं।'' ''कम उम्र वाले लोगों को बड़ी उम्र के लोगों का अवश्य आदर करना चाहिए।'' उदाहरण के लिए भारत में बच्चे सामाजिक अवसरों पर अपने बड़ों के चरण स्पर्श करते हैं। प्रतिमान किसी व्यक्ति के व्यवहार को सीमाबद्ध करने का ढंग है। इस अर्थ में प्रतिमान अलिखित नियम है। प्रतिमान मानवीय व्यवहार को निर्धारित करने, मार्गदर्शन करने, नियंत्रित करने तथा भविष्यवाणी करने का काम करते हैं। अब यह साफ है कि प्रतिमानों को उन अलिखित नियमों और व्यवस्था के रूप में समझा जा सकता है जिसके आधार पर समूह जीवित रहते हैं।

हम व्यक्तिगत या निजी और सामाजिक प्रतिमानों में अंतर कर सकते हैं। निजी प्रतिमान शुद्धरूप से अपने चरित्र में वैयक्तिक होते हैं, और वे व्यक्तियों के साथ ही होते हैं। वे केवल संबंधित व्यक्तियों के व्यवहार को ही प्रभावित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति नववर्ष दिवस पर संकल्प ले सकता है कि वह धूमपान बन्द कर देगा और इस निर्णय का पालन करेगा।

किन्तु समाजशास्त्रियों की सामाजिक प्रतिमानों में अधिक दिलचस्पी है। सामाजिक प्रतिमान लोगों के समूह द्वारा विकसित किये गये वे नियम हैं जो निश्चित रूप से यह उल्लेख करते हैं कि विविध स्थितियों में लोगों को किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए या नहीं करना चाहिए। उदाहरण के लिए बच्चों को बाहर जाने के लिए, अपने माता-पिता की अनुमति लेनी चाहिए। सामाजिक प्रतिमानों को हमेशा समाज की अनुमति मिलनी चाहिए। अनुमति नकारात्मक और सकारात्मक हो सकती है। नकारात्मक अनुमति के मामले में प्रतिमानों को तोड़ने वालों को समूह द्वारा नियत दण्ड दिया जाता है। जबकि जो प्रतिमानों का पालन करते हैं, उन्हें सकारात्मक अनुमति के परिणामस्वरूप पुरस्कृत किया जाता है। उदाहरण के लिए वे बच्चे जो हमेशा अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करते हैं और उनकी अनुमति से सब कुछ करते हैं उनकी प्रशंसा हरेक व्यक्ति करता है। किन्तु दूसरी ओर वे बच्चे जो अपने माता-पिता की बातों पर ध्यान नहीं देते उनकी आलोचना परिवार के सदस्य करते हैं। कार्यस्थल पर सकारात्मक अनुमति दिया जाना किसी कर्मचारी को कार्यालय में अच्छा काम करने के लिए उसे दी गई प्रोन्नति है। हम कह सकते हैं कि अनुमति व्यक्ति और समूह के व्यवहार के प्रति दूसरों से प्राप्त प्रतिक्रिया है जिसका लक्ष्य हमें यह आश्वस्त करता है कि प्रदत्त प्रतिमानों का सख्ती से अनुसरण हो या उनका सावधानीपूर्वक अनुपालन हो।

अनुमति औपचारिक या अनौपचारिक हो सकती है। औपचारिक अनुमति वहाँ होती है जहाँ लोगों का कोई निश्चित ढाँचा या एजेन्सी है जिसका काम प्रतिमानों के समुच्चय को सकारात्मक रूप ढंग से निश्चित रूप से पालन करना है। आधुनिक समाज में औपचारिक स्वीकृति के मुख्य प्रकार वे हैं जो दण्ड की प्रणाली में निहित हैं तथा जिसका प्रतिनिधित्व एजेंसियां करती हैं। उदाहरण के लिए मोटर कार से संबंधित अपराधों को लेकर जुर्माना या लाइसेंस की क्षति का दण्ड दिया जाता है। औपचारिक सकारात्मक स्वीकृति को हम सामाजिक जीवन के कई क्षेत्रों में पाते हैं उदाहरण के तौर पर वीरता के लिए पदक का दिया जाना, अध्ययन-अध्यापन संबंधी सफलता की पहचान के लिए डिग्री या डिप्लोमा का दिया जाना।

अनौपचारिक स्वीकृति, सकारात्मक या नकारात्मक, हरेक समाज की दिनचर्या संबंधी

Notes

विशेषता है। सकारात्मक प्रकार में वे स्वीकृतियाँ शामिल हैं जिनके अनुसार हम किसी को "बहुत अच्छा किया" कहते हैं या किसी के प्रति प्रशंसात्मक रूप से मुस्काते हैं या उसकी पीठ थपथपाते हैं। नकारात्मक अनौपचारिक स्वीकृतियाँ हैं- किसी का अपमान करना, किसी को झिड़कना, या किसी व्यक्ति विशेष से शारीरिक रूप से दूर रहना। प्रतिमानों के निश्चित अनुसरण में, परिवार, मित्रों, पड़ोसियों आदि का स्वीकृति प्राप्त करने में और हास्यास्पद होने, लज्जास्पद होने या अलग हटाये जाने से बचने के लिए औपचारिक स्वीकृति मौलिक महत्व के हैं। लोग प्राय: औपचारिक और अनौपचारिक दोनों प्रकार की स्वीकृतियों को ही मूल्यवान मानते हैं।

उपर्युक्त विचार विमर्श से हम प्रतिमानों की निम्नांकित विशेषताओं को पहचान सकते हैं:-

(i) प्रतिमान समाज के अंग हैं।

(ii) प्रतिमान सकारात्मक और नकारात्मक दोनों होते हैं।

(iii) प्रतिमान औपचारिक और अनौपचारिक दोनों होते हैं।

(iv) प्रतिमानों के पास स्थितियाँ होती है।

(v) प्रतिमान स्वीकृतियों से संबंधित होते हैं।

## पाठगत प्रश्न 8.1

सही उत्तर को चिन्हित करें:

1. निम्नांकित में से कौन मूल्य का उदाहरण होगा:

   क. नन्दिनी मानती है कि परीक्षा में धोखा देना गलत है।

   ख. राजेश का मानना है कि यह उनके बच्चों के लिए अच्छा है कि वे किताब पढ़ते हैं।

   ग. संजीव मानते है कि बच्चों को चाय या काफी नहीं पीना चाहिए।

   घ. ऊपर के सभी

2. सकारात्मक स्वीकृति का उदाहरण होगा:-

   क. कारागार की सजा

   ख. अच्छे नागरिक होने के लिए सरकार का नकद पुरस्कार

ग. किसी भूल हुए बच्चे के प्रति दयावान होने के लिए कोई आपको देखकर मुस्कराए

घ. ख और घ दोनों

3. प्रतिमान हो सकते हैं:-

क. किसी समूह में सामान्य व्यवहार

ख. अलिखित कानून

ग. वक्तव्य जो अच्छे और खराब माने जाते हैं

घ. ऊपर के सभी

## 8.2 प्रतिमानों का महत्व

उपयुक्त विचार विमर्श से यह स्पष्ट है कि सामाजिक प्रतिमानों की धारणा सामाजिक संरचना की ही बुनियाद स्थापित करती है। प्रतिमान व्यक्तियों के व्यवहार को निर्धारित करते हैं तथा पारस्परिक व्यवहार में मदद करते हैं। वे हमारे व्यवहार को नियमितता तथा अपरिहार्यता का कुछ अंश देते हैं वे हमारे व्यवहार के पथ प्रदर्शक के रूप में कार्य करते हैं। वे हमारे तौर तरीकों को ठीक करते हैं और हमारे दैनिक जीवन को नियमित करते हैं। कोई व्यक्ति प्रतिमानों की अनेदखी करे और दूसरे लोग उसे वर्जना भाव से न देखें यह नहीं हो सकता। उदाहरण के लिए कक्षा के कमरे में छात्रों को यह सिखाया जाता है कि किसी शिक्षक के सामने कैसा व्यवहार करें। जब शिक्षक कक्षा में प्रवेश करते हैं तो छात्र खड़े हो जाते हैं, जब शिक्षक प्रश्न पूछते हैं, छात्र खड़े हो जाते हैं और उत्तर देते हैं, जब छात्र देर से आते हैं तो कक्षा में प्रवेश करने के लिए उन्हें अवश्य अनुमति लेनी चाहिए। यदि छात्र इन नियमों का पालन नहीं करते तो उन्हें दूसरों की अस्वीकृति या दण्ड भी मिलना चाहिए।

प्रतिमान हमारे जीवन के अभिन्न अंग हैं। हम अपने दैनिक जीवन में कई लोगों से मिलते हैं और एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। प्रतिमानों के बिना व्यक्ति को प्रत्येक क्षण निर्णय लेने के बोझ को सामना करना पड़ेगा। निम्नलिखित उदाहरण इस बात को दिखायेंगे कि किस प्रकार प्रतिमान हमारे दैनिक कार्य को आसान कर सकते हैं। उदाहरण के लिए कालेज जाने वाले छात्र सुबह उठते हैं, मुंह धोते हैं, नहाते हैं, नाश्ता करते हैं, कपड़े पहनते हैं, सवारी पर चढ़कर कालेज जाते हैं, दूसरे मित्रों से मिलते हैं, व्याख्यान सुनते हैं, पुस्तकालय जाते हैं, मित्रों के साथ गप-शप करते हैं और शाम को घर वापस आते हैं, और इसी प्रकार चलता रहता है। छात्रों को यह सब क्रियाकलाप

Notes

करने में कठिनाई या समस्या का सामना नहीं करना पड़ता। इनके पीछे कारण यह है कि इन कार्यकलापों में प्रत्येक किसी न किसी प्रतिमान से निर्धारित होता है। छात्रों को इन प्रतिमानों की जानकारी होने से उनका कार्य आसान हो जाता है।

प्रतिमान समाज को जोड़कर रखने की शक्ति देते हैं। लोगों का सामूहिक तथा सहकारी जीवन प्रतिमानों के कारण सम्भव हो पाता है। प्रतिमानों से संबंधित प्रणाली समाज को आन्तरिक रूप से जोड़कर रखने की मजबूती देती है, जिसके बिना सामाजिक जीवन संभव नहीं है। उदाहरण के लिए किसी कार्यालय में सभी कर्मचारियों तथा अधिकारियों को समयबद्धता तथा कार्यों को पूरा करने के सम्बन्ध में खास नियमों का पालन करना पड़ता है। ये नियम उन्हें एक सहभागी प्लेटफार्म पर लाने में सहायता करते हैं। प्रतिमान सामाजिक व्यवस्था को कायम रखने में सहायता करते हैं।

### 8.2.1 प्रतिमानों के प्रकार

सामाजिक प्रतिमान बहुत से हैं और विभिन्न प्रकार के हैं। वे विभिन्न प्रकार के रूप ग्रहण करते हैं। वे अपनी सख्ती और टिकाउपन के संबंध में एक दूसरे से भिन्न होते हैं। वे व्यक्ति और समाज पर अपनी शक्ति और प्रभाव में एक रूप नहीं रहे हैं। इसलिए समाजशास्त्र के मूल पाठ में प्रतिमानों का कोई मानक वर्गीकरण नहीं है और हर समाजशास्त्री ने भिन्न सूची प्रस्तुत की है। इनमें पहला यह है कि निर्धारण करने वाले प्रतिमान भी होते हैं और निषेध करने वाले भी। निर्धारण करने वाले प्रतिमान बताते हैं कि लोगों को क्या करना चाहिए और निषेधात्मक प्रतिमान बताते हैं कि लोगों को क्या नहीं करना चाहिए। प्रायः निर्धारणात्मक तथा निषेधात्मक प्रतिमान एक साथ होते हैं यानी हमसे कुछ करने की अपेक्षा की जाती है और हमें कुछ नहीं करने की मनाही भी होती है। हमसे अपेक्षा की जाती है कि हम अपने समाज में कपड़े पहनें और सड़कों पर नंगे चले जाने की मनाही होती हैं।

दूसरा प्रेक्षण यह है कि प्रतिमानों में कुछ ऐसे हैं जो पूरे समाज में व्याप्त हो जाते हैं और कुछ ऐसे हैं जो कम व्याप्त हैं खास समूहों में ही प्रचलित रहते हैं। पहले को हम सामुदायिक प्रतिमान कहेंगे तथा बाद वाले को संस्थात्मक प्रतिमान कहेंगे। किसी नये परिचित से मिलने पर हाथ मिलाने का रिवाज सामुदायिक प्रतिमान का उदाहरण है, यह हमारे समाज में सभी वर्गों और समूहों में दिखाई पड़ता है। संस्थात्मक प्रतिमान का उदाहरण हिन्दुओं में यज्ञोपवीत पहनने का रिवाज है और यह ऊँची जाति के लोगों में लागू है किन्तु अन्य सभी जातियों में नहीं।

प्रतिमानों को इन दो वर्गों, निर्धारणात्मक या निषेधात्मक तथा सामुदायिक या संस्थात्मक रूपों में बांटने का तरीका उन श्रेणियों को दर्शाता है जो एक दूसरे की काट करते हैं।

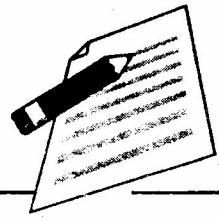



फिर भी सभी प्रतिमानों का उल्लेख तीन मुख्य मूल धारणाओं के अन्तर्गत किया जा सकता है– लोकमार्ग, लोकाचार और रीति - रिवाज जिन पर हम विचार विमर्श करेंगे।

लोकाचार प्रतिमानों की दूसरी श्रेणी का प्रतिनिधित्व करती है। लोकाचार वह शब्द है जो व्यवहार के ढंग को द्योतित करता है। जो न केवल मान्य है बल्कि नियत है। आसान शब्दों में जब लोकमार्ग स्पष्ट रूप से समूह के मानकों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसकी समूह समझ उचित है, भलाई के लिए सही और आवश्यक है, तब उन्हें लोकाचार के रूप में जाना जाता है। लोकाचार सकारात्मक भी हो सकते हैं और नकारात्मक भी। बड़ों का आदर करना, सच बोलना आदि सकारात्मक लोकाचार के उदाहरण हैं।

नकारात्मक लोकाचार 'नहीं करने योग्य आचरण' का प्रतिनिधित्व करते हैं, उदाहरणस्वरूप चोरी नहीं करो, झूठ नहीं बोलो। लोकाचार वे माध्यम हैं जिनके द्वारा व्यक्ति अपनी पहचान अपने साथियों के साथ बनाता है। परिणामस्वरूप लोकाचार लोगों को एक आन्तरिक समूह में बांधता है। इस प्रकार लोकाचार सामाजिक व्यवस्था को कायम रखने में मदद करता है। उदाहरण के लिए छात्रों को अपने विद्यालय में निर्धारित पोशाक अवश्य पहननी चाहिए। यह न केवल मान्य है बल्कि आचरण का स्वीकृत रूप है। यह निर्धारण छात्रों पर दबाव बनाता है तथा वे नियम से विचलित नहीं हो सकते। और यह पोशाक रूपी संहिता निस्सन्देह स्कूल के छात्रों को एक सम्मिलित पहचान देती है।

रिवाज–दूसरे प्रकार के सामाजिक प्रतिमान, सामाजिक रूप से मान्य वे तरीके हैं जिनमें लोग साथ साथ व्यक्तिगत सम्पर्क में अपना कार्य करते हैं। खाने की, लोगों से मिलने जुलने की, खेलने की, काम करने की मान्य प्रक्रिया या ढंग को रिवाज कहा जा सकता है। रिवाज हमारी संस्कृति की रक्षा करते हैं और ये अगली पीढ़ी को संप्रेषित किये जाते हैं। उदाहरण के लिए भारत में यह रिवाज है कि परीक्षाओं के पहले या किन्हीं दूसरे पावन या धार्मिक अवसरों पर बड़ों का चरण स्पर्श किया जाता है, किन्तु पश्चिमी देशों में यह रिवाज नहीं है। लोगों ने अपने बड़ों को इन रिवाजों को कायम रखते देखा है। लोगों ने अपनी पूर्व पीढ़ी से इन्हें सीखा है और वे इन्हें कायम रखते हैं। इस प्रकार पीढ़ियाँ दर पीढ़ियाँ यह रिवाज विशेष हमारी संस्कृति का अंग हो गया है। उन्होंने हममें स्थायित्व और निश्चितता जोड़ी है। दुनिया के सभी समुदायों में रिवाज पाये जाते हैं। कोई समाज उनके बिना नहीं चल सकता। इसलिए रिवाज सामाजिक नियंत्रण के प्रभावशाली साधन के रूप में काम करते हैं। व्यक्ति शायद ही इनकी पकड़ से बच सकता है रिवाज हमें वह पृष्टभूमि भी देते हैं जिनसे नियमों का निर्माण और उनकी

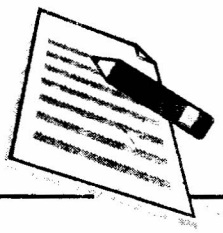

Notes

स्थापना होती है। रिवाज तब कानून बन जाते हैं जब राज्य उन्हें नियमों के रूप में नागरिकों के पालन के लिए लागू करते हैं।

## 8.3 प्रतिमान विहीनता

प्रतिमान विहीनता चालू सामाजिक प्रतिमान और नियमों से एक अलगाव का बोध है। अधिकतर, समाज व्यवस्थित ढंग से कार्य करता है। अच्छी संख्या में लोग अनजाने ही अपने संबंधित समूह में नियमों का पालन करते हैं। इस प्रकार साधारणत: लोग वही करते हैं जिसकी अपेक्षा समाज उनसे करता है। इससे समाज सहजतापूर्वक चलता है। किन्तु हमेशा यही नहीं होता। किसी राज्य में जहाँ चालू सामाजिक प्रतिमान एक दूसरे का विरोध करते हैं तथा जहाँ उन्हें टूटने का परिणाम भुगतना पड़ता है, लोग अपने ही सहभागियों से अलगाव महसूस करते हैं। यह स्थिति है जब कमतर सर्वानुमति होती है या लक्ष्य और मूल्यों के प्रति निश्चितता का अभाव रहता है। उन क्षणों में लोगों की प्रतिमानों में की गई हिस्सेदारी के प्रति थोड़ी कम आस्था होती है और उनके व्यक्तिगत आचरण में समाज के मार्गदर्शन का अभाव होता है। उनकी यह इच्छा होती है कि वे पूरे समाज के स्वार्थ की उपेक्षा कर व्यक्तिगत स्वार्थों की लक्ष्य-पूर्ति करते रहें। सामाजिक नियंत्रण तब निष्प्रभावी हो जाता है। इस प्रकार समाज टूटने का डर रहता है। ऐसी स्थिति को निराशाजनक स्थिति कहा जाता है।

## पाठगत प्रश्न 8.2

कोष्ठ में दिये गये उचित शब्दों को लेकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें:

1. प्रतिमान ..... की अपेक्षाएं है। (व्यक्ति द्वारा हिस्सेदारी की, समूह द्वारा हिस्सेदारी की)
2. प्रतिमानों को भिन्न प्रकार के ..... और दण्ड द्वारा अनुमोदित होता है। (पुरस्कार, स्वीकृति)
3. तीन प्रकार के प्रतिमान लोकमार्ग ..... रिवाज (परम्परा, लोकाचार, अनुष्ठान) है।
4. प्रतिमान समाज को ..... प्रदान करते हैं। (आन्तरिक मजबूती, खतरा, प्रतिस्पर्धा)
5. प्रतिमान सामाजिक व्यवस्था को ..... में सहायक होते हैं (तोड़ने, कायम रखने, आगे बढ़ाने)

Notes

6. यदि ............................... हो, तो सामाजिक प्रतिमान एक दूसरे का खंडन करते हैं या सीधे साफ तौर पर टूट जाते हैं, (भटकाव, प्रतिमानहीनता)

7. प्रतिमान हीनता की स्थिति में सामाजिक नियंत्रण ............................ हो जाता है। (प्रभावी, मजबूत, निष्प्रभावी)

8. बिना उपर्युक्त प्रतिमानों के समाज को ............................ का खतरा रहता है। (विखण्ड, अव्यवस्था, अस्थायित्व)

## 8.4 मूल्य

मूल्य छोटे तौर पर एक ऐसी अवधारणा है जो यह बताती है कि क्या वांछनीय है, सही है, अच्छा है। मूल्य सामाजिक पसंद को परिभाषित करते हैं, समाज की पसंद का उल्लेख करते हैं और हमें भविष्य में कार्रवाई के लिए दृष्टि देते हैं। व्यक्ति के मूल्य उनकी विशिष्ट संस्कृति से काफी प्रभावित होते हैं। सामाजिक बनावट, सामाजिक संस्थाएं, प्राय: सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन से अनुवर्तित होते हैं और कभी-कभी इसका उल्टा भी होता है। यह स्थिति काफी स्पष्ट हो जायेगी यदि हम इस बात को फोकस करें कि ये सामाजिक मूल्य किस प्रकार पारम्परिक समाज से आधुनिक समाज तक विकसित होकर आये हैं।

### 8.4.1 मूल्यों का महत्व

मूल्य निम्नलिखित कारणों से महत्वपूर्ण है।:

१. **मूल्य सामूहिक अन्तर व्यवहार को स्थायित्व देते हैं।** वे समाज को एक साथ बाँधकर रखते हैं क्योंकि उनकी शामिल भागीदारी होती है। चूंकि उनमें सहभागिता होती है, इसलिए यह सम्भावना होती है कि वे समाज के सदस्यों को ''अपनी तरह'' देखें।

२. **मूल्य उन नियमों को वैधता प्रदान करते हैं जो हमारे विशिष्ट कार्य कलापों को निर्धारित करते हैं।** नियमों की स्वीकृति तथा अनुपालन इसलिए किया जाता है क्योंकि उनमें मूल्य निहित हैं।

३. **मूल्य विभिन्न प्रकार के नियमों के सम्मुचयों के बीच तालमेल बिठाने में सहायता करते हैं।** उदाहरण के लिए यदि भारत समानता के मूल्य को संजोए रखता है तब उसे उन नियमों को संशोधित करना पड़ेगा जो पति-पत्नी के, स्त्री-पुरुष के तथा जातियों के बीच आपसी संबंधों का निर्धारण करते हैं।

Notes

## 8.4.2 पारम्परिक और आधुनिक मूल्य

पारम्परिक भारतीय समाज का गठन, सोपानक्रम, बहुवादिता तथा धार्मिक पवित्रता के सिद्धान्त पर किया गया था। सोपानक्रम इकाइयों की व्यवस्था को व्यक्त करता है जो एवं संबधों की उस प्रणाली को निर्मित करता है जो उच्च-निम्न श्रेणी में हैं। उदाहरण के लिए ब्राह्मणों को लें जिनके बारे में यह विश्वास किया जाता है कि स्रष्टा के मुख से निकले हैं और वे सबसे ऊँचे स्थान पर हैं। उनकी तुलना में शूद्रों के बारे में यह माना जाता है कि वे देवता के पैर से निकले हैं सोपानक्रम ने अपने को न केवल जातियों और उपजातियों के सामाजिक स्तर की प्रणाली में व्यक्त किया बल्कि यह हिन्दुओं के जीवन से संबंधित जीवन-चक्र, आयु-श्रेणी तथा नैतिक कर्तव्यों पर भी निर्भर करता है। उदाहरण के लिए शूद्र, पुजारी का या शिक्षण-कार्य का व्यवसाय नहीं अपना सकता। जबकि सोपानक्रम की धारणा प्रत्येक रूप में असमानता को व्यक्त करती है। यह प्रत्येक व्यक्ति और जाति समूह के लिए एक सुरक्षित और निश्चित स्थान निर्धारित करती है। उदाहरण के लिए कुम्हार अपने जीविकोपार्जन के लिए मिट्टी का बर्तन बनाता है। यह उसके जीविकोपार्जन का सुरक्षित साधन है क्योंकि कोई दूसरी जाति या उपजातियों को यह अधिकार नहीं है कि वे उसके व्यापार में दखल दें।

मूल्य के रूप में बहुवाद उस सहनशीलता को व्यक्त करती है जो दूसरे की जीवनशैली को स्वीकारती है। उदाहरण के लिए हिन्दुत्व अनिवार्यत: सहनशील था और इसने अचानक परिवर्तन करने के बदले, दूसरे धर्मों को सम्मिलित किया। हिन्दुओं ने अनेकानेक पंथों के अस्तित्व में विश्वास किया जो उसी एक लक्ष्य की ओर ले जाते हैं। इस प्रकार दूसरे लोगों के धर्म भारत में न केवल जीवित रहे बल्कि हजारों वर्षों से फलते फूलते रहे। सिद्धान्तों और कर्मकाण्डों के स्तर पर भेद रहते हुए भी विभिन्न धर्मों के अनुयायी पारस्परिक मेल मिलाप से रहे। प्रतिमान की यह व्यवस्था जाति-समाज के लिए महत्वपूर्ण थी। प्रत्येक जाति का अपना व्यवसाय, रिवाज, कर्मकाण्ड और परम्परा थी। प्रत्येक जाति एक स्तर पर एक दूसरे से भिन्न थी। अनेक स्तरों पर पारस्परिक रूप से निर्भर थी। उदाहरणस्वरूप, नाई, खेतिहरों की सेवा करता था तो खेतिहर भी अपनी फसल की कटाई के बाद, बदले में उसे अनाज का कुछ अंश देते थे।

धार्मिक पवित्रता ने व्यक्ति और समूह में एक संबंध ग्रहण किया जिसमें समूह को व्यक्ति के ऊपर प्राथमिकता थी। व्यक्ति से अपेक्षा की जाती है कि समुदाय के व्यापक हित को देखते हुए वह अपने कर्तव्यों का पालन करेगा और अपने अधिकारों का दावा करेगा। उदाहरणस्वरूप परम्परागत भारत में विस्तृत और संयुक्त परिवारों में सगे-

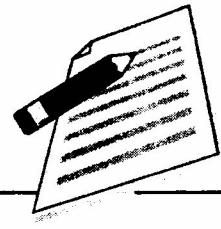



सम्बन्धी होते थे जिसमें निर्भर वृद्ध, विधवाएं, अविवाहित लोग तथा शारीरिक रूप से अपंग शामिल होते थे। यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति अपनी सामर्थ्य के अनुसार योगदान देता था, फिर भी यह आशा की जाती थी कि पारविारिक कोष से लोगों की जरूरतों की पूर्ति होगी। इससे लोगों में अपनी इच्छाओं के प्रति अपने सहयोगियों के तथा व्यापक समुदाय के हित में आत्म नियंत्रण की भावना जागती है।

उपर्युक्त विचार विमर्श से, पारम्परिक समाज के मूल्यों के महत्व के बारे में हमारा एक मत बना है। अब हम आधुनिक समाज में मूल्यों के बारे में विचार विमर्श करें। आधुनिक भारतीय राज्य जिन मूल्यों को लक्षित करता है वह भारत के संविधान में निहित है। ये मूल्य हैं लोकतंत्र, पंथनिरपेक्षता, और समाजवाद। यद्यपि प्रतिमानों का यह समुच्चय अपने मूल रूप में पश्चिम का है, भारतीय संदर्भ में इसे आवश्यक स्वीकार्यता और भारतीयकरण के साथ लागू किया जाता है।

लोकतंत्र अवसर की समानता पर बल देता है। लोकतंत्र की यह धारणा है कि स्वायत्त और स्वतंत्र व्यक्ति निर्णय की प्रक्रिया में भाग लेने हेतु सक्षम है। उदाहरणस्वरूप हमारे देश के नागरिक स्थानीय, राज्यस्तरीय तथा केन्द्रीय शासन के लिए नेताओं का चुनाव करते हैं।

पंथ निरपेक्षता का अर्थ है कि दूसरे समुदायों, विशेषकर धार्मिक समुदायों के लोगों के व्यवहार या रिवाजों के प्रति सहनशीलता का भाव रखना। ऐसी स्थिति मांग करती है कि हम दूसरे धार्मिक समूहों की विशिष्टताओं को मान्यता दें तथा मूल्य के रूप में पंथ निरपेक्षता को भी। पंथ निरपेक्षता का अर्थ यह भी हुआ कि दूसरे समुदायों के क्रिया कलापों में हम न केवल हस्तक्षेप न करें, बल्कि उनकी विशिष्ट जीवन शैली के बारे में एक सकारात्मक गुण-दोष विवेचना का भाव भी विकसित करें।

समाजवाद शब्द का अर्थ यह हुआ कि समुदाय के भौतिक संसाधनों का उत्पादन, वितरण तथा विनिमय इस तरीके से किया जाय कि सर्वसामान्य का हित हो। यह कुछ हाथों में धन के केन्द्रीभूत होने की तथा स्वामित्व के एकाधिकार की भर्त्सना करता है।

### 8.4.3 मूल्यों की विशेषताएं

उपर्युक्त विचार विमर्श से हम मूल्यों की निम्नलिखित विशेषताओं को प्रकट कर सकते हैं:

- मूल्य आस्था और विश्वास की वस्तु है।

Notes

- मूल्य सूक्ष्म होते हैं क्योंकि उनमें ज्ञानात्मक तत्व होते हैं।
- मूल्य अपनी प्रकृति में प्रतिमान मूलक होते हैं।
- मूल्य वे सामान्य विचार हैं जिनमें लागों की सहभागिता होती है।
- मूल्य संवेगों और भावनाओं से संबंधित होते हैं।
- मूल्य वस्तुओं की पसन्दगी के आधार हैं।
- मूल्य सापेक्ष रूप से स्थायी होते हैं।
- मूल्य समाज में आन्तरिक मजबूती लाते हैं।
- मूल्यों का लक्ष्य जनकल्याण है।
- मूल्यों में व्यवस्थात्मक सोपानक्रम होता है।

### 8.4.4 मूल्य संघर्ष

उपर्युक्त विचार विमर्श से यह स्पष्ट हो गया है कि मूल्यों का विकास कालक्रम में हुआ है तथा समाज में मूल्यों की महत्वपूर्ण भूमिका है। परन्तु समकालीन भारतीय समाज के महत्वपूर्ण कर्तव्यों में एक यह भी है कि वह पारंपरिक, सामाजिक मूल्यों और आधुनिक सामाजिक मूल्यों में ताल मेल बिठाये। इस खण्ड में हम यह देखेंगे कि यद्यपि मूल्य समुच्चयों का आपस में संघर्ष है, फिर भी इन समुच्चयों में समदृश्यता है।

हम यह कह सकते हैं कि बहुवादी पारम्परिक मूल्यों तथा पंथ निरपेक्षता के आधुनिक मूल्यों में कोई बुनियादी विराधाभास नहीं है, क्योंकि, जीवनशैली के प्रति सहनशीलता दोनों में ही आधारभूत है। लेकिन दोनों के बीच एक भेद है। अतीत का बहुवाद प्रत्येक समूह की विशिष्ट परम्परा से जुड़ा था जो अक्सर विशेष सुविधाओं को वैधता प्रदान करता था। किन्तु पंथनिरपेक्षता सुविधासम्पन्न समूहों से यह अपेक्षा रखता है कि वे कम सुविधा सम्पन्न समुदायों के विकास पथ अवरुद्ध नहीं करें।

सोपानक्रमता पारम्परिक व्यवस्था का महत्त्वपूर्ण मूल्य है। महत्वपूर्ण बात थी संसाधनों का उपलब्ध होना तथा पुरस्कारों का वितरण, जन्म पर आधारित होना। उदाहरण के लिए ब्राह्मणों को किसी दूसरी जाति की तुलना में ऊँचा स्थान प्राप्त था। आधुनिक समाज में, फिर भी, सामाजिक प्रतिष्ठा, व्यवस्था में व्यक्ति के योगदान की क्षमता पर आधारित है। धार्मिक पवित्रता के पारम्परिक सिद्धान्तों के अनुसार यह आवश्यक था कि व्यक्ति अपने स्वार्थ से अलग हटकर सामूहिक लक्ष्य को ही साधें। किन्तु, फिर भी लोकतंत्र यह प्रकट करता है कि व्यक्ति एक स्वायत्त अस्तित्व है जो अपनी स्वतंत्रता और अपने स्वार्थ को सामूहिक रुचि के मूल्यों को बलिदान कर साधता है। इस प्रकार

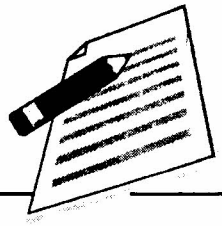



धार्मिक पवित्रता का सिद्धान्त और व्यक्तिवाद एक दूसरे से भिन्न हैं। यहाँ यह स्पष्ट है कि पारम्परिक मूल्य और आधुनिक मूल्यों के बीच एकरूपता केवल बहुवाद और पंथ निरपेक्षता के मामले में ही संभव है।

### 8.4.4.1 मूल्यों के प्रकार

मूल्यों का वर्गीकरण किया जा सकता है क्योंकि उनमें सोपानक्रम होते हैं। हम प्राय: कहते हैं कि मूल्य हर जगह पाये जाते हैं। मूल्यों की अपनी प्रकृति मानवीयतायुक्त हैं। वे विभिन्न प्रकार के हैं राधाकमल मुखर्जी भारतीय समाज से संबंधित दो प्रकार के मूल्य बताते हैं।

पहला तात्कालिक मूल्य जो अपनी प्रकृति में सांसारिक है और जिन्हें प्रतिदिन के जीवन में देखा जा सकता है। दूसरा, अलौकिक मूल्य है जो मनुष्य की मुक्ति से संबंधित हैं। लेकिन, हम सामान्य प्रकार के मूल्यों पर विचार करेंगे। वे हैं:-

1. **नैतिक मूल्य:** प्रत्येक समाज में विभिन्न प्रकार के प्रतिमान हैं। वे वैज्ञानिक नहीं है। वे धर्म से संबंधित हैं तथा समाज की विभिन्न स्थितियों से संबंधित है। उदाहरण के लिए माता-पिता का आदर करना, चोरी नहीं करना, झूठ नहीं बोलना। समाज इन मूल्यों को तोड़े जोने की अनुमति नहीं देता है।
2. विवेक पर आधारित मूल्य अपनी प्रकृति में वैज्ञानिक और तर्क संगत हैं। कठिन परिश्रम करना आधुनिक समाज का तर्कसंगत मूल्य है।
3. सौन्दर्य बोध से संबंधित मूल्य साहित्य, कला, संस्कृति से संबंधित है। संगीत, उजला रंग भारतीय समाज में सुन्दर स्त्रियों का द्योतक है जो भी हो, ये सभी मूल्य, मूल्यों के दो प्रकारों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

प्रबल मूल्य- वह मूल्य, जिसका प्रभाव किसी व्यक्ति के मस्तिष्क में प्रबल है तथा जिसका उल्लंघन व्यक्ति के लिए संभव नहीं है, प्रबल मूल्य कहा जाता है।

वैकल्पिक मूल्य - वह मूल्य, जिसमें किसी व्यक्ति को यह आजादी रहती है कि वह अपनी इच्छा और पसन्द से बर्ताव करे, वैकल्पिक मूल्य कहा जाता है।

## 8.5 प्रतिमान और मूल्यों में संबंध

मूल्यों को अच्छाई या वांछनीयता के उपाय के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। वे आचरण के लिए सामान्य मार्गदर्शन देते हैं। इस अर्थ में उनका प्रसंग "उच्चतर प्रतिमान व्यवस्था" के रूप में किया जाता है। किन्तु प्रतिमानों का बहुत अधिक

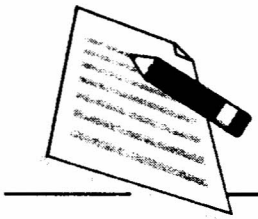

Notes

विशिष्ट अर्थ लिया जाता है। वे खास स्थिति में उपयुक्त और मान्य व्यवहार को परिभाषित करते हैं। प्रतिमानों के पालन करने से ही मूल्यों को संजोया जाता है। उन दोनों के बीच संबंधों को निम्नांकित उदाहरण के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। समाज निजता के मूल्य को संजोये रख सकता है। यह मूल्य व्यवहारों को सामान्य मार्गदर्शन देता है, प्रतिमान यह परिभाषित करते हैं कि विशेष स्थितियों और परिस्थितियों में निजता के मूल्य को परिभाषित किया जाय। उदाहरण के लिए निजता से संबंधित प्रतिमान इस बात पर जोर दे सकते हैं कि किसी व्यक्ति के पत्र बिना उसकी अनुमति के नहीं खोले जायें। किसी व्यक्ति का या वैयक्तिक जीवन उसकी अपनी दिलचस्पी है और दूसरे लोगों को उसके व्यक्तिगत जीवन में दखल नहीं देना चाहिए। इस प्रकार प्रतिमानों की श्रंखला यह निर्देशित करती है कि किस प्रकार लोगों को 'निजता' को लेकर व्यवहार करना चाहिए।

## पाठगत प्रश्न 8.2

रिक्त स्थानों की पूर्ति कोष्ठक से उपयुक्त शब्दों को लेकर करें:

1. सामाजिक बनावट में कोई परिवर्तन सामाजिक ..... में परिवर्तन से होगा। (संस्था, मूल्य, क्रिया)
2. भारतीय समाजवाद संसाधनों के निर्धारण तथा उनकी ..... की भूमिका (जन्म प्रतिभा और वर्ग) पर आधारित है।
3. ..... अवसर की समानता पर बल देता है (समाजवाद, धार्मिक पवित्रता, लोकतंत्र)
4. धार्मिक पवित्रता के मामले में व्यक्तियों को ..... लक्ष्यों को साधना चाहिए। (व्यक्तिगत, सामूहिक)
5. समाजवाद, वितरण के ..... सिद्धान्त पर आधारित है। (प्रतिभा आधारित, सामाजिक प्रतिष्ठा आधारित, जरूरत आधारित)

## आपने क्या सीखा

- आपने प्रतिमानों की धारणा को पढ़ा है विशेषकर सामाजिक धारणा तथा वे किस प्रकार समाज के लिए महत्वपूर्ण हैं।

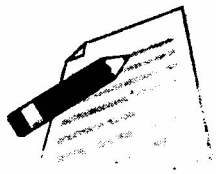

Note

- अब आपको यह बात स्पष्ट है कि प्रतिमान दिशानिर्देश हैं जो विशेष स्थिति में हमारे आचरण को संचालित करते हैं।
- आपने मूल्यों के बारे में भी जाना है तथा यह भी कि वे किस प्रकार प्रत्येक समाज में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।
- यह स्पष्ट है कि मूल्य समाज के लिए अपरिहार्य हैं और समाज के लिए क्या अच्छा है और क्या वांछनीय इससे संबंधित है।
- कालक्रम में मूल्यों का विकास हुआ है।
- प्रतिमानों को मूल्यों के प्रतिबिम्ब के रूप में देखा जा सकता है।
- प्रतिमान अलिखित कानून है।
- प्रतिमानों की विविधता को एक मूल्य की अभिव्यक्ति के रूप में देखा जा सकता है।
- इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि व्यवस्थित और स्थायी समाज प्रतिमान और मूल्यों की सहभागिता के बिना संभव नहीं है।

## पाठान्त प्रश्न

निम्नलिखित शब्दों के उत्तर 100 से 250 शब्दों में दें:

1. निम्नांकित शब्दों को परिभाषित करें और अपने शब्दों में उनकी व्याख्या करें:

   अ. प्रतिमान  ब. मूल्य
2. प्रतिमान और मूल्य के बीच संबंधों का उल्लेख करें।
3. प्रतिमानों के विभिन्न प्रकार कौन से हैं? अपने शब्दों में वर्णन करें।
4. मूल्यों का हमारे समाज में क्या महत्व है? उदाहरण के साथ व्याख्या करें।
5. प्रतिमानहीनता से आप क्या समझते हैं? उदाहरण के साथ व्याख्या करें।

## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

8.1

1. d  2. b  3. b

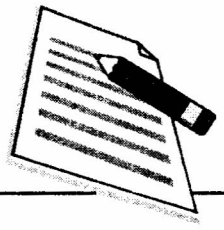

Notes

8.2

1. समूह सहभागिता
2. स्वीकृति
3. लोकाचार
4. आंतरिक मजबूती
5. कायम रखना
6. प्रतिमान विहीनता
7. अप्रभावी
8. अव्यवस्था

8.3

1. मूल्य
2. मेधा
3. लोकतंत्र
4. सामूहिक
5. मेधा आधारित